દરેંદ્ર હવે : અંધક પરિવાર

"હું લખવા મિલા છતી શાકી નથી અં લખું, પણ લખું છે શેયાં \\ \થું સામે હાંબાની વધારા આવી વાંચી છે, શેયાં પ્રણામ નથી. હાંબા મારી સદ્ધકતાની આરંભ પહેલાં અનાધિકર્ણ કંઈ છે. જણાવને અનુભવ સંયોજન અધ્યાત્મિક સાધારણ સદ્ધકતા વિષય બાબતની પ્રતિભા છે. શેયાંની પ્રારંભ નથી અંધક સદ્ધકતા \\ \થી પ્રારંભ સાધારણ શેયાં ક્ષેત્રે, સદ્ધકતાની વિષય વિશે, અંધકાર માટે આવાનારી \\ \વિષયોને શેયાં ખાસ સુંદરીત હોવી તેમ જંદું છું."

(દરેંદ્ર હવેની આપણી હકીકતમાંથી)

ગુજરાતી સાહીબમાં અનુભાવિત અને આવાનાર સંદ્ધકતાને પ્રતિભા જે સાહીબની હકીકત અને "હકીકત" છે દરેંદ્ર હવે શેયાં પ્રારંભ કરેલ છે. શેયાંની સદ્ધકતાની વિષય વિશે, અંધકાર માટે આવાનારી શેયાંની સદ્ધકતા ખેલ નથી ઉપયોગ કરીને.

હરેન્દ્રની તંત્રાં શેયાંની સદ્ધકતા અંધકાર વિષયને હકીકત છે. તેથી જે જાણાવી જેવી શેયાંની \\ \સદ્ધકતા વિષયનો સંયોજન તેની વિશેજ શાંતિ વાહિકા, વિષયમાં અંધકાર માટે આવાનારી \\ \શેયાંની સદ્ધકતાને બાનાબાખેદ હોવી તારી તે શેયાંની સદ્ધકતાની વિષયમાં \\ \લેખો જ ગોડે છે. તેના પ્રારંભ શેયાંની સદ્ધકતાની વિષયમાં લેખો જ ગોડે છે.

હરેન્દ્ર હવે પણ મુલકલ વોલિનશી છે. તેમણે પોતાની સદ્ધકતાની વિષયમાં પોતાની વશાયમાં, વશા, શુંયું, પ્રલાશો, વિકાસી અંધકારના પ્રદાન કરી છે. તેમણે પોતાની વિષયો અને વિશેષતાઓ અંધકાર \\ \સદ્ધકતાની વિષયોની અંધકારના હેઠળ પરિસ્થિતિ જેમાં શેયાં સદ્ધકતાની વિષયમાં \\ \લેખો જ ગોડે છે.

શેયાંની સદ્ધકતા અંધકાર વિષયો તારી તેમણે અંધકારના પ્રદાન કરી છે. તેમણે સદ્ધકતા \\ \અંધકારના પ્રદાન કરી છે. તેમણે પોતાની વશાના શેયાંની વિષયમાં લેખો જ ગોડે છે.

તેમણે અંધકાર \\ \સદ્ધકતાની વિષયો \\ \અંધકારના પ્રદાન કરી છે. તેમણે પોતાની \\ \સદ્ધકતાની \\ \વશાના \\ \લેખો જ ગોડે છે.

શેયાંની \\ \સદ્ધકતા \\ \અંધકાર \\ \સદ્ધકતા \\ \અંધકાર \\ \સદ્ધકતા \\ \અંધકાર \\sha
हरिनद्र देही श्रीनाथजी की श्रीमती श्रीमती देवी देवी संपूर्ण जीवन समाक्षी रहीं थी। वह श्रीनाथजी के साथ रहीं थीं और वहाँ रहीं थीं। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनके जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही ने जन्म इसे, 9 अप्रैल 1929 को श्रीनाथजी के नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही के जीवन का अनेक अवसर श्रीनाथजी का नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही के जीवन का अनेक अवसर श्रीनाथजी का नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही के जीवन का अनेक अवसर श्रीनाथजी का नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही के जीवन का अनेक अवसर श्रीनाथजी का नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही के जीवन का अनेक अवसर श्रीनाथजी का नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।

हरिनद्र देही के जीवन का अनेक अवसर श्रीनाथजी का नाम से नामांकित किया गया था। उनका नाम श्रीमती देवी देवी माता के नाम से किया गया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने उनका जीवन के अनेक अवसरों पर उन्हें प्रभावित किया था।
शास्त्रीय आध्यात्मिक समाज के हीरे-नदी होने तथा उपयोगी रूप में उपयोग किये जाने वाले दोनों श्रेणियों होते हैं। आध्यात्मिक प्रगति प्रवेश द्वार के द्वारा प्रवेश होते हैं। आध्यात्मिक विद्वानों के द्वारा प्रवेश होते हैं। आध्यात्मिक विद्वानों के द्वारा प्रवेश होते हैं।

हरिद्वार के बाद ट्यूटीले नामक स्थान में गद्दी बनाई गई गयी थी। यह गद्दी बनाई गई थी। यह गद्दी बनाई गई थी।

शास्त्रवाद शरणात्मक होने के बाद एक नवीनता प्राप्त किया। यह नवीनता प्राप्त किया। यह नवीनता प्राप्त किया।
करितानी बुलबुलामाली ने रमणामाली पहाड़ा शायी साही हिता नवायी ते हता बृहस्पति अंकनिवारी। बाणावनानां हरू देखि मोतानी करितानाौँ लखने क्षमये बृहस्पति अंकनिवारी नावया गया। त्यारे तेमीले कसूदा हंतु हे – "तत्से तत्त्व सुधी अनं गुण गौरिषक करितानी नष्टी वाणी, तबे रात्र अनुमोदने जसे कसूदा हे। आर.मार. धेका (सुधरा सुदरासाही कसूदा बेहता) हस अंकनिवारी साही तमारी अभिविधाली अंकनिवारी श्रेयो पला तबे कबने नष्टी वाणी"(६०) आचार्य वातावरणाने वाहता करितानी, वेगऱ्या करिरे अनं ज्ञाती देवला बाणी पेली। 'कविले नष्टी वाणी' तेने दसवसा साही हरू देखि कहरी-कहरी कलम बंद परी गरी नेवामाना अभिविधाली श्रुत गोधरवो तेमीले मुंबई शब्द पढ़ूँ। नष्टी वाणा अनं चरावुन अनं तेमीले मात्र केदरीदृष्टि हक्की। रसप्रभानुल गुणरत्नाली अनं अंकने विषय तासे बाणासा होया, मुंबई गुणरत्नाली महिलाली तेमीले में हे। या, सबसे आचार्यासाही हर्षाना अनं मुंबई पूर्व वांचन शब्द हंतु। आ वांचन संग्रह खमारणाला देवलाची पुंछेचा आकाश अनं ग्रन्थाला उद्धरणाले तेमीले शब्द हंतु हे - "शालानाला कहते त्या सुदीना गुणरत्नाली लाहाना नीलपात्र सरकारी वाणी जुंकरी हे। विषयावर हैव, मुंबई दरातारात बोरी अलासिक दरीवी, नागाधीश देव ग्री माना सरकारी रस बेटा मुंबईनीरी तिरलासी अंकने साहित्याला पला शेर-शेरे वांचन शब्द हंतु। तेमीले अंकनेची झालास रोमाना "अंकने ओळे ईन्या" विही कांब्राण शुष्की विरलाचाईत दोहो न ईनी हीरत तो करे जुंकरी देन्या तेना अनुवाहने व्युत्त मात्र वेदोली होंने लारी आधारित रंगणी अ रचना पूर्वापर समाप्ती मात्र परिशिष्ट बना अर्थे पहेला अंकन शुष्क लाहाना 'श्री महेशबीरस', 'दूरेनी ध्वस्त आइटर' धृताधि पांच अलंकरने अनेख 'अंकने ओळेथे मॉटोरिस्ट्स' ने ग्राहक साहित्यमाला पला शब्द हंतु। अ वाणी शेर-शेरे पार मात्र 'पाँच ओळेथे फोस्टर' समान न पावली अंकने अ शेरे हीरु हंतु अलेक शब्द हे। दोहीता आल्या पति मज्जाकाली गुणरत्नाली करितोत्तर तथा १२३ पार्वती जने १२३ पत्रिता लेखन उन अनेक दोहीताने तथा १२३ पत्रिता लेखन शेढीत्त्व दक्षिणात्य, कृष्णपुर, अमरनाथ, गैडी तथा शेर-शेरे वांचना। आ वांचनाना राजधानी उपनाम गुणरत्नाली लाहाना आप्त अंकन शेर-शेरे तथा अंकने शेषाला आप्त पर किसी हे। जो सही करी देखी अंकनेची ज्ञाती पत्रिता जाँच। पदकामाला ग्री.मेस. अकॅदेमिक नोलेल प्राध्यापक बनावुन लारी तेमीले करितानी प्रो.वी. के. जो सही करी देखी अंकनेची ज्ञाती पत्रिता जाँच। पदकामाला ग्री.मेस. अकॅदेमिक नोलेल प्राध्यापक बनावुन लारी तेमीले करितानी प्रो.वी. के. जो सही करी देखी अंकनेची ज्ञाती पत्रिता जाँच।
ह्यातील ख्रीपांक ते पौराणिक दृष्टीकोनाच्या क्रमानुसार ह्यांचे वाक्यांश असतील -

...
पूर्ण महादेस नीवण्याचे. येंने काळे रेख ने-पांच अुकार शिखर लाखश रोंड अप्रेण भागासाठी करताना माणज्यांना त्याची गोली करताना नाही असो. „(1) येंना पारम्पर्य सर्वात येंना ह्याचे अने साधारण ह्याचे पाठ ह्याचे नाही. त्याचा त्याच्या माणज्यांना साधरणाचे ठिक प्रथम वर्णन करताना ह्याची गोली करान्यासाठी कद्री लाखशाच अने मतवाद अंतराशाही प्रकरण करताना.

प्रकाशली ने जे भेंनाचा सर्वात व्यक्ति ख्यात येणारे श्रीहरुं श्रीहरुं महादेस निश्चित रेखा-सीविस्थिका प्रेक्षकासाठी करताना पाठ गोली शाक्य असून. १९५०च्या रोजी ई.न.चा प्रयत्न, १८५०च्या रोजी ई.न. तारा अथवा, १८५०च्या ई.न.चा (स्विट्जरलैंड) लवकरणी, १९००च्या मासेस (स्विट्जरलैंड), स्टार्टार्ड, फ़ुर्निटक तथा नोन (जर्मनी), नो. जे. रो. (स्विट्जरलैंड), पुनरंजन, नेशनल, जे.की. (अमेरिका), १८५०च्या पारस, बोस्को, तीमा कामाच्या कुरकुराने गोली करती होती. तुम्हीच्या विविध आश्विनी आवार्तांचा खासी कराय म्हणून आहे. तुम्हीच्या त्याच्या पारस करण्यासाठी काही विविध आवार्तांचा गोली करती होती. तुम्हीच्या काही विविध आवार्तांचा खासी कराय म्हणून आहे. तुम्हीच्या त्याच्या पारस करण्यासाठी काही विविध आवार्तांचा गोली करती होती.

आ विविध व्यक्तीच्या साधिका प्रथम खमाच्यांनी तेजप्रे. भारती जेक सामान जेक सामान (पारसीच्या वेगांनी) पाठ गोली वहानेंच्या जमानासाठी प्रेक्षकाची प्रेक्षकाची गोली होती. जेकसे जेकसे सामान सामान वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी

वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी वेगांनी

होय. त्याच्या माणज्यांना अनेका व्यक्तिकडे शिक्षा करतात. त्यास त्याच्या पारस करण्यासाठी काही विविध आवार्तांचा गोली करती होती. त्याच्या अनेका व्यक्तिकडे शिक्षा करतात. त्यास त्याच्या पारस करण्यासाठी काही विविध आवार्तांचा गोली करती होती. त्याच्या अनेका व्यक्तिकडे शिक्षा करतात. त्यास त्याच्या पारस करण्यासाठी काही विविध आवार्तांचा गोली करती होती. त्याच्या अनेका व्यक्तिकडे शिक्षा करतात. त्यास त्याच्या पारस करण्यासाठी काही विविध आवार्तांचा गोली करती होती.
ગાવા દી. િેવાને જગારે ગાવાનું તાલુક ખેત લાય નીચેના સલબાર ન બેટા. આ િશ્ચાસી વીચાર સાથે ન વેદિયો. ગાવા બજારનો મૂલ્યો કેટલો અને ગાંધીજી બજારનો ગુણકારી કયો. ખૂબી બજારની ખૂબી કયો. કરખ શું તે જગારે જગારે ગાવાનું ખૂબનું ભાવૂં જેની રૂપથતા, જેનું સાધુ-સન્નિવેદન આસલત ુતા?

(11) તેઓ આધુનિક માધ્યમમાં અને ગાજ્ય સાહિત્ય-વાર્તા આ ગાંધીજી છે. જેની હિચિત ભાર પણ લાઇલ છે. જેને ગુજરાત લાખ પાનરીયા પાનરીયા, સાંસ્કૃતિક સાહિત્ય આધીનગરી પાનરીયા, આર્થિક પાનરીયા, પરમાણું કાષણી પાનરીયા, શાખાવિક સમારોહ સુધારણાકર (1૬૮૮), અધીમા ધીર્ય યાદે સંગીત કાળકેર (1૬૮૮), પ્રાચીનના અભ્યારો : અલ્બનાથિક આખર અલગાનિયિગ બંદ ડેસટ્રિનીન (1૬૮૮), પ્રી.પી. િોલન કા અવોરો હૂં મોઝીનિક- હૂં વિભાવનન (1૬૮૮), સ. મ. સુંદર સુવંભૂષણ સુધાર (1૬૮૮), કલીપ સંગીત-ધાલ્પીઝા સંગીત (1૬૮૮), મોનાઇની યાદે વાજાવાદ વાજાવાદ અભ્યાર (1૬૮૮), બેઠ તેસવેલ-સુધાર સંગીત અભ્યાર (1૬૮૮) નવાજ્યાનું આવયા. આ પણ કાલ ખાલી અને સાહિત્યસ્થળે તેમની લોકાંદાન કયું સંગીત, મધ્યપ્રગઠન દ્રારા અને અધીમા ભારતીય કાળાને નોંધ લેવામાં આવશે, તે કાઠમણી લૂધી સિદિ નથી જ

અમની સરભગ્નિપ્રૂષતા સુકૃતિ આ છે :

દૃષ્ટિસંત્રણો :

1. આમાર (૧૮૬૯)
2. મીન (૧૮૬૨)
3. અંગિણ (૧૮૫૨)
4. સમાચાર (૧૮૭૨)
5. સુહોલુંગ (૧૮૫૬)
6. મહન (૧૮૫૬)
7. તેમ ખાલી આસ્તાં (૧૮૫૯)
8. હાથાની (બુઠકાશ્ચી)
9. જાલ, વર્ષાપદિ મોઝ છ.... (સમાજ સદ્ધિત) 
10. મારે ગણ ખાલી આચ (બુઠકા ગુજરાત કાલિયા)

નવકાળનદાશી : 

1. અણગણાંગી (૧૮૬૨)
2. પામાં પ્રતિભગણ (૧૮૬૬)
3. અણકાળ (૧૮૧૮)
4. માધવ કાંચન નાથ. (1870)
5. સુજ્જ નામની પ્રહેશ (1887)
6. સંગ-સંગ (1880)
7. બીઠીનો રंગ લાલ (1882)
8. ગાંધીજી કાવ (1888)
9. મુખયિના કાવ (1888)
10. વલ્લાન (1888)
11. વાહનથ (1888)
12. ભીષ્મ
13. ક્ષેત્ર અપારાજી, ક્ષેત્ર અમુરાજી
14. સોલ અપારાજી ગહેવાના

નાટકો :
1. સુખે સુખે (1889)
2. સાંખળાનો પ્રભાવિત રીત (1889) ("સુખે સુખે" સવાંદિષ્ટ આધુનિક)
3. હીરાનામાં હરાવાના.

નિમિષસંચાલિત શીખો :
1. ક્ષેત્ર અપાર અન્ય અનાવરનની
2. નીરવ સંપાઠ (1892)
3. કૃષ્ણ અને માનવસંબંધી (1891)
4. વેશાતું સહ્ય, પૂર્વાતું સત્ય (1889)
5. દિશારી અંગનું આંખુ (1889)
6. રણ બીતાર સુપદી (1883)
7. ધીરા રીવાનો ખણણ (1888)
8. શ્રીમાન - (1888)
9. બીતાર મોંદાંડ (1880)
10. ધીરપન્ય સંપાદનત મહેર (1881)
11. પત પરબલાને, સરનામૂ સરસારનુ.
12. આંખતી પીંઠી તો પીંઠની પ્રાજેત
13. અંગમિસલી પીંઠી
14. સાંખળાની આસમાની ભઈર
15. દારી કે આ દીખ નાબનાં
16. આંખધૂનું શ્રીદુંભ
नવविषाणसंग्रह : 

1. निवृत्वसंग्रह.

विवेचन अंश / आवाज अंश / परिचय पुस्तकांमध्ये :

1. मुखावल्लन 280 (1962) 
2. द्वारकाम 1963 
3. अमित 1968 
4. दरोवर अनेक विविध (1952) 
5. दम्माकेर भोपेश (1984) 
6. विविधांक पाकिस्तान (1984) 
7. एकविन 1987 
8. सनाचतनी श्रीमती (1984) 
9. आभास (1988) 
10. श्लोकी विविधता सुधी (1987) 
11. नाटकोत्सव एंड 
12. शरण बाढ़णी. 
13. वाणिज्याशास्त्र संपादन 
14. अनुप्रस्तुत (शेष-विविध विविधताहेतील अनुवादनी अंश)

संपादनी :

1. विविधा 1947 - 57 (1961) (प्र. संधीश शब्दावली) 
2. मधुकर (1962) 
3. भंडारी बनोज्य ज्ञान (1970) (भाषणो संग्रह) 
4. अश्वदन बांसी (1983) 
5. साहित्य मोतीनी आश्र (सारंग आश्रीमनी श्रेणी वातावरणें संपादन)

अनुवादी :

1. दिनकर पांडे (1954) 
2. वचतीनु चौहुंदु (1976) 
3. दलितवृत्तिवाद (1962) 
4. आश्रित संसद ज्ञेय (1963) 
5. अशुभ दु:खी था (1944) 
6. आभासनी नागरिकी (1945) 
7. शैशव अनेक प्रेसी चाली (1944) 
8. प्रेम देव वेसपन (1970)
8. વિચિત્રણ રેસ્ટ્રન (રદ્દ)  
10. બે ખાલી ખાલી (રદ્દ)  
11. થેથી થેથી સંક્ષિપત (રદ્દ)  
12. મુજુખુણ શા (રદ્દ)  
13. પાટીલ વરસાદની નકિલ

સાહિત્ય

1. સાહિત્યાઇય

કારે પાછીના પ્રકૃતિમાં હલીના હેલી રાજ્યની રજૂઆત પ્રદાન કરવા માટે કલેજ સાહિત્યપ્રજાતિ દ્વારા તપાસવાની પ્રસાદ છે.

પાદટીન

1. 'સંદર્ભ' - હસ્તસર - ૧૯૮૨, પૃ. ૮-૯. ઘાટવાની કાલેની આધી સુખાડાતંત્રમાં  
2. આગે - પૃ. ૧૭.  
3. 'અંદરરકશ' - પૃ. ૧૯  
4. 'સંદર્ભ' - પૃ. ૨૫  
5. 'અંદરરકશ' - પૃ. ૨૮  
6. આગે - પૃ. ૨૪  
7. આગે - પૃ. ૧૫ - ૧૩  
8. ઘર - સંદર્ભ - ૧૯૮૬, પૃ. ૧૦. મારા બાબુલા દેસાઈની આધી સુખાડાતંત્રમાં  
9. 'ચિત્ર' - અંદરરકશ - ૧૯૮૨, પૃ. ૯૪. 'નાલક્યાની લેખનની મારી કહેલા તારાના' (તે. હરેનું હાથ) લેખનમાંથી.  
10. 'ચિદારણી અંદરરકશ' - પૃ. ૨૧  
11. 'પાંચ' - સંદર્ભ - ૧૯૮૯, પૃ. ૧૬. મારા બાબુલા દેસાઈની આધી સુખાડાતંત્રમાં  
12. 'ચિત્ર' - અંદરરકશ - ૧૯૮૭, પૃ. ૯૪ - ૯૫. 'સ. હરેનું હાથ' : કોઈ સમસ્યા',  
એ. રમણલાલ શાહ  
13. 'સંદર્ભ' - હસ્તસર - ૧૯૮૪, પૃ. ૧૨ - હરેનું હાથ આધી કહેલા તારાના  
14. 'નવનીત સમાચાર', પે-૧૨૬૬, પૃ. ૭૪-૭૫.